मसीह में होने का क्या अर्थ है

इस पृथ्वी पर मसीही होना सबसे बड़ा सम्मान हो सकता है। पौलुस मसीही बनकर प्रसन्न था (प्रेरितों 26:28, 29)। पतरस ने हमें इस नाम में परमेश्वर की महिमा करने के लिए कहा (1 पतरस 4:16)।

यदि मुझे एक मसीही की संक्षिप्त और सरल परिभाषा देने के लिए कहा जाए, तो मैं कहूंगा ''व्यक्ति जो मसीह में है।'' *मसीह के बाहर* होने के विपरीत, *मसीह में* होने के अर्थ पर ध्यान करके हम समझ सकते हैं कि मसीही होना कितनी बड़ी बात है।

मसीह के बाहर होने का क्या अर्थ है

इफिसियों 2 अध्याय में इफिसुस के लोगों का उस समय का चित्रण है जब वे पाप में मरे हुए थे (आयतें 1, 2)।

(1) उस समय वे *ईश्वर रहित* थे (आयत 12); उनका स्वर्ग में पिता नहीं था। परमेश्वर का हमारे महान स्वर्गीय पिता के रूप में होना सशर्त है (2 कुरिन्थियों 6:17, 18)।

(2) वे *मसीह से अलग* थे (आयत 12)। उनका कोई महायाजक नहीं था, परमेश्वर नहीं था जिसके पास वे प्रार्थना करते और मसीह नहीं था जिसके द्वारा वे प्रार्थना कर सकते। परमेश्वर तक केवल मसीह ही पहुंचा सकता है। इसलिए, मसीह के बिना प्रार्थना में स्वर्गीय सिंहासन तक नहीं पहुंचा जा सकता।

(3) वे *मेल से अलग* थे, क्योंकि ''वही हमारा मेल है'' (आयत 14)।

(4) उन्हें *कोई आशा नहीं* थी (आयत 12)।

(5) वे इस्राएल के (आत्मिक) राष्ट्रमण्डल से *अलग किए हुए* थे (आयत 12)।

(6) वे अपने अपराधों और पापों में *मरे हुए* थे (आयत 1)।

मसीह के बाहर होने का अर्थ उस दुष्ट में होना है (1 यूहन्ना 5:19, 20)। उस दुष्ट में होने का अर्थ उसके राज्य और उसके वश में होना है। ''मसीह में'' और ''उस दुष्ट में'' होने वाली अभिव्यक्तियों में दो सम्भावित आत्मिक सम्बन्धों का पता चलता है। बीच का कोई

स्थान नहीं है अर्थात कोई व्यक्ति या तो मसीह में है या उस दुष्ट में। निश्चय ही, हम केवल ज़िम्मेदार लोगों की बात कर रहे हैं, बच्चों की नहीं।

मसीह में होने का क्या अर्थ है

जो मसीह में हैं उनके पास परमेश्वर है, क्योंकि हमें मसीह के लहू में उसके साथ मिलाया गया है (इफिसियों 2:16)। केवल इतना ही नहीं, बल्कि मसीहियों के पास महायाजक के तौर पर मसीह है। प्रार्थना मसीह में होने वाले व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी आशीष है।

मसीह में मिलने वाली आत्मिक आशिषों में केवल प्रार्थना ही नहीं है। पौलुस ने इफिसियों 1:3 में ऐलान किया कि सभी आत्मिक आशिषें उसी में हैं। हम उन सभी आशिषों को एक-एक करके गिन तो नहीं सकते, परन्तु उनमें छुटकारा (इफिसियों 1:7), नई सृष्टि बनना (2 कुरिन्थियों 5:17), मेल (इफिसियों 2:16), और अनन्त जीवन (1 यूहन्ना 5:11) शामिल हैं।

कोई मसीह में कैसे प्रवेश करता है

जब किसी को यह सिखाया जाए कि मसीह के बाहर होने और मसीह में होने का क्या अर्थ है, तो उसे चाहिए कि तुरन्त पूछे कि, ''मसीह में होने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?'' इस प्रश्न का उत्तर बाइबल के इन दो पदों में मिलता है:

> क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का [into christ] बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का [into his death] बपतिस्मा लिया? (रोमियों 6:3)।
>
> और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है (गलतियों 3:27)।

इन पदों में बताया गया है कि हमारा बपतिस्मा ''मसीह में'' होता है। इनमें संकेत नहीं; बल्कि ऐलान है! मसीह में होने अर्थात उसमें बपतिस्मा लेने का केवल यही एक ढंग है।

बपतिस्मा लेने से पूर्व व्यक्ति, मसीह के बाहर होता है। जब वह मसीह में बपतिस्मा ले लेता है, तो वह मसीह में हो जाता है। निस्संदेह, बपतिस्मा लेने से पहले व्यक्ति को तन मन से तैयार होना आवश्यक है। वह एक पश्चात्तापी विश्वासी हो (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)। बाइबल के अनुसार केवल पश्चात्तापी विश्वासी ही बपतिस्मा लेने के योग्य है। जब एक पश्चात्तापी विश्वासी अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मे में गाड़ा जाता है, तो वह मसीह में आ जाता है।

कोई मसीह में कैसे रहता है

इन अभिव्यक्तियों में एक मसीही के जीवन तथा मृत्यु को संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत किया गया है। इन पर विचार करते हुए, अपने आप से पूछिए कि क्या वे आपके जीवन का हाल बताते हैं।

(1) *''मसीह में आना।''* यह मनपरिवर्तन से ही होता है जिस पर हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं। बपतिस्मे के लिए समर्पण करने वाला पश्चात्तापी विश्वासी मसीह से बाहर होने से लेकर मसीह में आने की प्रक्रिया से गुजरता है।

(2) *''मसीह में बने रहना।''* केवल आरम्भ करना ही काफी नहीं है। यीशु ने कहा था, ''यदि कोई मुझ में बना नहीं रहे, तो वह डाली की नाईं फेंक दिया जाता ... है'' (यूहन्ना 15:6)। फल लाने और परमेश्वर को भाने के लिए, हमें अपने जीवन के अन्त या समय के अन्त तक वफादार रहना आवश्यक है।

(3) *''प्रभु में मरना।''* ''जो मुर्दे प्रभु में मरते हैं, वे अब से धन्य हैं'' (प्रकाशितवाक्य 14:13)। ''परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा'' (1 थिस्सलुनीकियों 4:14)। मसीह में मरने के लिए, पहले मसीह में आना और विश्वासी रहकर पवित्र बने रहना आवश्यक है।

सारांश

मसीही बनकर मसीह में मिलने वाली आशिषों को कौन नहीं पाना चाहेगा? यह सत्य है कि जो मसीह में भक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे (2 तीमुथियुस 3:12), परन्तु हम परमेश्वर के वचन में मिलने वाली तेजवान आशिषों के सामने ऐसी तुच्छ बातों को भूल जाते हैं (1 यूहन्ना 5:11; प्रकाशितवाक्य 14:13)। ''क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के साम्हने, जो हम पर प्रकट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं'' (रोमियों 8:18)।